पेरिस
मई १७, २००८

संदेश संख्या – १४४

एक भक्त क्रियावान के अस्तित्व मे आनन्दमय विस्फोट

एक फ्रेंच भक्त जिसका संस्कृत नाम है और जो इंग्लैंड में कार्य करता है, से प्राप्त संवाद वस्तुतः दूसरे वैसे क्रियावानों से साझा करने योग्य है जो इसे समझ सकते हैं । और इसीलिए इसे यहाँ संदेश के रूप में दिया जा रहा है ।

यह मालूम नहीं है कि जो अनुभूत हुआ, वह क्रिया–अभ्यास से संबंधित है या नहीं परन्तु प्रायः शरीर के मध्यभाग से सिर तक ऊर्जा का स्वतः स्फूर्त्त आरोहण होता है और फिर वह स्वतः नीचे आ जाता है या धीरे–धीरे चारों ओर फैल जाता है । उसके बाद परमानन्द में ''तैरने'' की अनुभूति, जैसा नशे की अवस्था में होता है, अन्दर–बाहर सभी जगह अनुभूत होती है और जब वैसा होता है तब शून्यता रूपी पूर्णता (इसे लिपिबद्ध करने का दूसरा कोई तरीका नहीं) होती है अर्थात् समय ठहर जाता है । ऐसा होने पर कभी–कभी इस शरीर को लेट जाना पड़ता है ताकि यह घटित हो जाय । जब प्रेमा सत्संग में बैठा हुआ शिवेन्दुजी को सुन रहा था तब भी उसके शरीर में ऊर्जा का ऐसा आरोहण घटित हुआ था ।

प्रेमा ने जिस घटना का वर्णन ऊपर किया है, उसके बाद से ही उसके शरीर में हमेशा अन्तर्दृष्टि का उदय हो रहा है परन्तु उसका वर्णन या उसकी अभिव्यक्ति बहुत कठिन है । वह सतत घटित हो रही है किन्तु कालातीत है।

जो भी यहाँ लिखा गया है वह कोई बौद्धिक या काव्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं है और न ही लच्छेदार मुहावरों से सजा कोई लेख । यह तो शून्य से उत्पन्न यथार्थ अन्तर्दृष्टि है ।

यह इस शरीर में घटित हुआ है । जब किसी वस्तु को देखने के लिए किसी लेन्स का उपयोग किया जाता है तब लेन्स के पीछे एक अवास्तविक नाभी–केन्द्र बन जाता है और अवास्तविक प्रतिबिम्ब का आभास होता है, उसी तरह मस्तिष्क में द्वैत के कारण ''मैं'' की अवास्तविक छवि बन जाती है । यह अवास्तविक विचारक या मिथ्या ''मैं'' तब अपनी द्वैत की दुनिया प्रक्षेपित करती है जो केवल छवियाँ होती है । लेकिन ये छवियाँ, जो इन्द्रियों को वास्तविक प्रतीत होती हैं, और कुछ नहीं बल्कि शून्यता में प्रकाश का खेल मात्र है । प्रतिक्षण, कुछ भी नहीं घटित हो रहा फिर भी, सबकुछ स्वाभाविक रूप से घटित हो रहा है । इस शरीर के लिए दैनिक जीवन, घटनाओं का सिलसिला है और एक चलचित्र की तरह, एक दृश्य दूसरे में बदल जाता है । यह अनवरत रूप से जारी है किन्तु निरुद्देश्य है । लगता है, कुछ बनने की बिना किसी चाहत के, शान्ति एवं सामञ्जस्य के साथ अज्ञात में अग्रसर होना ही जीवन है ।

इस शरीर ने भौतिक विज्ञान में डिग्री के लिए एक शोध परियोजना के अन्तर्गत ''चुम्बकीय प्रभाव में मस्तिष्क का लेखाचित्र (ग्राफ)'' विषय पर शोध किया है। इसने मस्तिष्क के मूलभूत संरचना और कार्य का अध्ययन किया है, यद्यपि बहुत कुछ अभी भी अज्ञात है । हाल के अनुसंधानों ने सिद्ध किया है कि कुछ विशेष परिस्थितियों में शरीर में जीवनपर्यन्त तंत्रिका–पुनर्निमाण (neurogeneris) हो सकता है (इन वैज्ञानिकों के अनुसार, नई चीजों को जीवनपर्यन्त सीखा या जाना जा सकता है)। मस्तिष्क जब द्वैत की अवस्था में नहीं रहता अर्थात् जब समझदारी की ऊर्जा की अग्नि ''मैं'' को सतत जलाती है तब शायद कुछ नया सृजन सम्भव होता है और परिणामस्वरूप नई तंत्रिका–धाराएँ (neuronal currents) उत्पन्न हो जाती हैं और उसी कारण एक क्रियावान का अस्तित्व हमेशा ही समझदारी की ऊर्जा में होता है । इसे तंत्रिका–ह्रास (neurosis) से तुलना कर समझें जिससे बहुत सारे मस्तिष्क प्रभावित हैं । तंत्रिका–पुनर्निमाण बनाम तंत्रिका–ह्रास को दैनिक जीवन में जीवन और मृत्यु के रूप में देखा जा सकता है ।

देखिए, हमेशा ही यह लगता है कि यह शरीर चुपचाप कुछ सृजन कर रहा है किन्तु सृजन करने को कुछ भी नहीं है ।

हार्दिक घनिष्ठता में वस्तुतः कुछ कहने की आवश्यकता नहीं होती । अतः प्रेमा के हृदय से बारम्बार निकला प्रेममय कृतज्ञता शिवेन्दुजी द्वारा स्वीकार हो।

जय शक्ति–चिति (शक्ति–प्रेम)

।। जय गुरु–प्रक्रिया ।।